पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार

दिनांक 25.09.2020 को पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। डा. सिंह ने आमंत्रित वक्ता डा. ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा डा. एस.पी. अहलावत, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली का ऑनलाइन स्वागत किया। डा. बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते कृषिवानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से पूर्णतया अवगत कराया।

आमंत्रित वक्ता डा. अहलावत ने वन आनुवांशिक सम्पदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर व्याख्यान में कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है। वन अनुसंधान केन्द्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डा. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी।

वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान, बांदा से प्रगतिशील कृषक, प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तणशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केन्द्र प्रमुख डा. सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की।

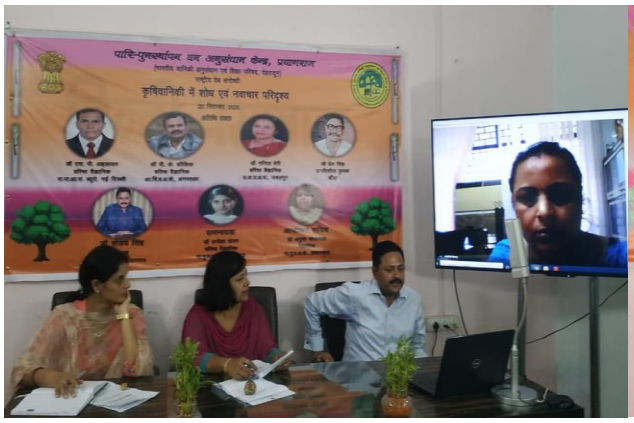

प्रथम तकनीकी सत्र में डा. चरण सिंह, वैज्ञानिक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा बर्माड्रेक एवं पॉपलर आधारित कृषिवानिकी पद्धतियाँ विषय पर तथा डा. आर. बी. सिंह वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान,, देहरादून द्वारा पड़ती भूमि में आजीविका के लिए मीलिया एवं आँवला आधारित कृषिवानिकी पद्धतियों का विकास विषय पर प्रस्तुति की। द्वितीय तकनीकी सत्र में डा. विलास सिंह, मुख्य तकनीकी अधिकारी, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान) द्वारा राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में कुमठ आधारित परम्परागत कृषिवानिकी प्रणाली में फसल उत्पादन, मृदा पोषक तत्व और गोंद उत्पादन विषय पर तथा डा. हेमन्त कुमार, सहायक प्रोफेसर वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स, प्रयागराज द्वारा जलवायु परिवर्तन और आजीविका में सुधार के लिए बाँस आधारित कृषिवानिकी पद्धति विषय पर व्याख्यान दिया गया। डा. संजीत कुमार, विभागाध्यक्ष तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, वाराणसी ने किसानों की आय बढ़ाने में कृषि वानिकी का महत्व पर चर्चा की।

कार्यक्रम समन्वयक डा. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अन्तर्गत पॉपलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से और आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया। डा. अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस (सफेदा) का कृषि वानिकी में महत्व, क्लोनल रोपण सामग्री तथा विपणन सम्बंधी विषयों पर प्रस्तुतीकरण किया। समापन सत्र में डा. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। संगोष्ठी में आनलाइन माध्यम से 100 से अधिक वैज्ञानिक, शोध छात्र व किसान आदि सम्मिलित हुए।

संगोष्ठी की संस्तुतियां

I. कृषि वानिकी में भूमि के इष्टतम उपयोग के लिए विविध अवयवों यथा जैव ईंधन, औषधीय पादप, तेल बीज वृक्ष, लाख, तसर, शहद उत्पादन के व्यापक समावेश से मॉडल विकसित करने हेतु शोध की आवश्यकता है।

II. कृषि वानिकी में एक दो प्रजातियों पर निर्भरता से मुक्त होकर वृक्ष फसल विविधीकरण पर बल देना चाहिए। हिमालयी आल्डर (*अलनस नेप्लेन्सिस*), वर्माड्रेक (*मीलिया डूबिया*), पॉपलर (*पोपुलस डेल्टोइडिस*), कुमठ (*अकेशिया सेनेगल*), आंवला, यूकेलिप्टस, कैसुरिना, ग्रीविलिया, ल्यूसेना, प्रोसोपिस, सैलिक्स आधारित कृषि वानिकी पद्धतियों में विभिन्न फसलों के साथ अनुसंधान परिणाम हितकारकों हेतु उपयोगी सिद्ध होंगे।

III. कृषि की वैकल्पिक पद्धति–आवर्तणशील खेती जिसमें एक तिहाई भाग में फलों व लकड़ी की खेती, एक तिहाई भाग में पशुओं का पालन और एक तिहाई भाग में कृषि जलवायविक क्षेत्र के अनुसार जैविक खेती की जाती है, में शोध एवं प्रसार की सम्भावनाएं हैं।

IV. कृषिवानिकी में उत्पादन बढ़ाने तथा विभिन्न संगठनों के बीच प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, सभी हितधारकों के साथ सम्बंध स्थापित करके प्रसार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

V. बाँस की खेती की क्षमता को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त और बंजर भूमि पर बाँस उगाने के लिए आधुनिक उपकरण और प्रौद्योगिकियां बाँस की उत्पादकता को बढ़ाने संबंधी अनुसंधान की आवश्यकता है।

VI. उत्तराखण्ड में कृषि वानिकी के लिए महत्वपूर्ण उपयोगी प्रजातियां जैसे कचनार, भीमल, गेंठी, सीसल, भांग एवं बिच्छू घास कृषि वानिकी प्रजातियों को अपनाकर आजीविका में सुधार ला सकते हैं।

VII. पूर्वी उत्तर प्रदेश में किसानों के लिए एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में *प्रोसोपिस सिनेरारिया* और *कैलिएण्ड्रा सूरीनामेन्सिस* आधारित कृषि वानिकी के साथ लाख की खेती को भी सम्मिलित करने की प्रबल संभावना है।

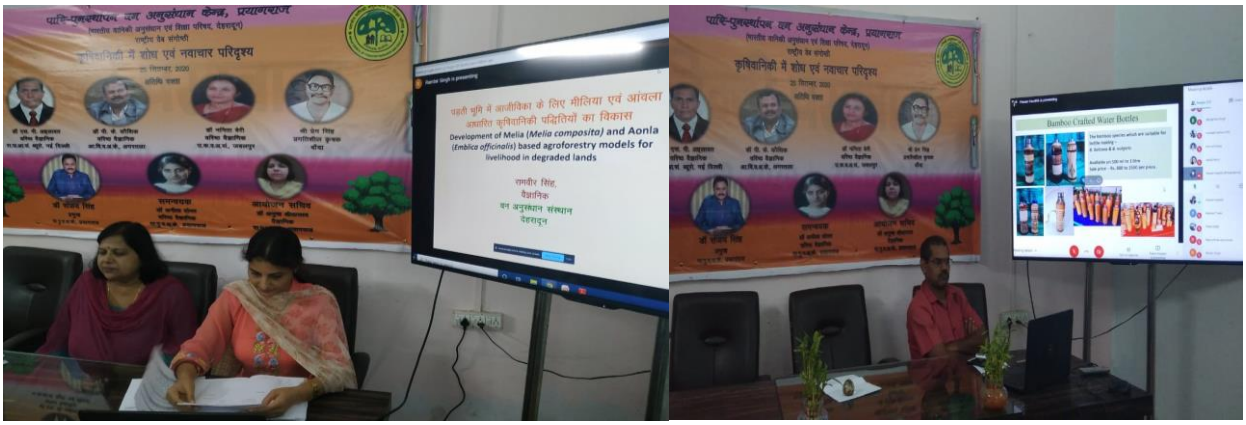

राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

कृषिवानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य

दिनांकः 25.09.2020

कार्यक्रम विवरण

10:30 – 10:45 पूर्वाह्न	**उद्घाटन सत्र**
	– परिचयः डा. अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज
	– दीप प्रज्जवलन
	– स्वागत भाषण : डा. संजय सिंह, प्रमुख, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज
	– कार्यक्रम की रूप रेखाः डा. अनीता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के.
10:45 – 01:15 अपराह्न	**तकनीकी सत्र– प्रथम**
	आमंत्रित व्याख्यान
	– डा. ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर **"आत्म निर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी मॉडल"**
	– डा. एस. पी. अहलावत, प्रभाग प्रमुख, पादप अन्वेषण एवं जर्मप्लाज्म संग्रह, रा.पा.आ.सं.ब्यूरो, नई दिल्ली **"वन आनुवांशिक सम्पदा का कृषि वानिकी में महत्व"**
	व्याख्यान
	– डा. चरन सिंह, वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून **"वर्माड्रेक एवं पॉपलर आधारित कृषिवानिकी पद्धतियां"**
	– डा. आर. बी. सिंह, वैज्ञानिक वन अनुंसधान केन्द्र, देहरादून **"पड़ती भूमि में आजीविका के लिए मीलिया एवं आंवला आधारित कृषिवानिकी पद्धितियों का विकास"**
	– डा. कुमुद दूबे, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज **"कृषिवानिकी का जन विकास में महत्व"**
	– डा. अनीता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज **"पूर्वी उत्तर प्रदेश में पॉपलर कृषिवानिकी"**
02:30 – 04:30 अपराह्न	**तकनीकी सत्र– द्वितीय**
	आमंत्रित व्याख्यान
	– डा. पवन कुमार कौशिक, वैज्ञानिक, वन अनुसंधान केन्द्र, अगरतला **"सुनिश्चित एवं सतत् आय के अनुकूल कृषिवानिकी पद्धतियां"**
	– श्री प्रेम सिंह, प्रगतिशील कृषक, कृषक शिक्षा केन्द्र, बांदा **"कृषि वानिकी में कृषकों के हित"**
	व्याख्यान
	– डा. संजय सिंह, प्रमुख, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज **"अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी का विविधीकरण"**
	– डा. हेमन्त कुमार, सहायक प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स, प्रयागराज **"जलवायु परिवर्तन और आजीविका में सुधार के लिए बाँस आधारित कृषिवानिकी पद्धति"**
	– डा. संजीत कुमार, मुख्य समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, वाराणसी **"किसानों का आय बढाने में कृषि वानिकी का महत्व"**
	– श्री आलोक यादव, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज **"कृषि वानिकीः कृषक का न्यूनतम निवेश एवं अधिकतम लाभ का स्रोत"**
	– डा. अनुभा श्रीवास्तव वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज **"पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस कृषिवानिकी"**
04:30 – 05:15 अपराह्न	**सर्वांगीण सत्र**
	– समूह चर्चा
	– संस्तुतियाँ
	– धन्यवाद ज्ञापनः डा. अनीता तोमर, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज

मीडिया प्रसार

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर हुई चर्चा

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विषय पर एक दिनी राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी हुई। कार्यक्रम की शुरुआत केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने वरिष्ठ वैज्ञानिकों की ओर से दीप प्रज्वलन से किया। आमंत्रित वक्ता डॉ. ननिता बेरी तथा डॉ. एस.पी. अहलावत का ऑनलाइन स्वागत किया गया। डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रभावी कृषिवानिकी पद्धति की चर्चा की। डॉ.एसपी अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व पर रोशनी डाली। डॉ. पवन कौशिक, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने विचार रखे। देहरादून से डॉ.चरण सिंह, रामवीर सिंह, डॉ. बिलास सिंह,डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. संजीत कुमार ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

4
दैनिक जागरण
प्रयागराज, 26 सितंबर, 2020
www.jagran.com

'जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी की विशेष भूमिका'

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज में शुक्रवार को 'कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य' विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी हुई। इसमें आमंत्रित वक्ता राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (नई दिल्ली) के डॉ. एसपी अहलावत ने कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है।

आमंत्रित वक्ता उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (जबलपुर) की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ननिता बेरी ने 'आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रभावी कृषि वानिकी' पद्धति पर व्याख्यान देते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य से अवगत कराया। वन अनुसंधान केंद्र (अगरतला) के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिकी ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। कार्यक्रम समंवयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी यूपी में कृषि वानिकी के तहत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने, वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कृषि वानिकी के तहत किसानों द्वारा कम लागत से ज्यादा आमदनी के उपाय और उनके स्रोतों के बारे में बताया। आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने पूर्वी यूपी में कृषि वानिकी में यूकेलिप्टस के महत्व से अवगत कराया। वन अनुसंधान संस्थान (देहरादून) से डॉ. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (जोधपुर) से डॉ. बिलास सिंह, शुआट्स से डॉ. हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र (वाराणसी) से डॉ. संजीत कुमार ने अपने शोध प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की शुरुआत केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों के दीप प्रज्जवलन से हुई।

हिन्दुस्तान–26.09.2020

दैनिक जागरण–26.09.2020

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज, २५ सितम्बर।पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति २०१४ से अवगत कराया। राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के डॉ. एस.पी अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है।

वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान बांदा से प्रगतिशील

कृषक प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तणशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रमुख डॉ.संजय सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अंतर्गत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया साथ ही डॉ.अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस का कृषि वानिकी में महत्व से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ.तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून से डॉ.चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डॉ.बिलास सिंह, शुआट्स, प्रयागराज से डॉ.हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी से डॉ.संजीत कुमार ने अपने-अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से अवगत कराया। राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के डॉ. एस.पी अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है।

वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान बांदा से प्रगतिशील कृषक प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तनशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रमुख डॉ.संजय सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की।

कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अंतर्गत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया साथ ही डॉ.अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस का कृषि वानिकी में महत्व से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ.तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून से डॉ.चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डॉ.बिलास सिंह, शुआट्स, प्रयागराज से डॉ.हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी से डॉ.संजीत कुमार ने अपने-अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को कृशि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृष्य पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृशि वानिकी के मुख्य उद्देष्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवष्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृशिवानिकी नीति 2014 से अवगत कराया।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। डॉ. सिंह ने आमंत्रित वक्ता डॉ. ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा डॉ. एस.पी. अहलावत, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली का ऑनलाइन स्वागत किया। डॉ. बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि कृषिवानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से पूर्णता अवगत कराया। आमंत्रित वक्ता डॉ अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व हैं। वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान, बांदा से प्रगतिशील कृषक, प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तनशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रमुख डॉ सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अंतर्गत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से अवगत कराया। आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया साथ ही डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस (सफेदा) का कृषि वानिकी में महत्व से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। संगोष्ठी में आनलाइन माध्यम से 100 से अधिक वैज्ञानिक, शोध छात्र व किसान आदि सम्मिलित हुए। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून से डा. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डा. बिलास सिंह, शुआट्स, प्रयागराज से डा. हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी से डॉ. संजीत कुमार ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। आज दिनांक 25.09.2020 को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार

परिदृश्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। डॉ. सिंह ने आमंत्रित वक्ता डॉ. ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा डॉ. एस.पी. अहलावत, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली का ऑनलाइन स्वागत किया। डॉ. बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि कृषिवानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से पूर्णता अवगत कराया। आमंत्रित वक्ता डॉ अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व हैं। वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान, बांदा से प्रगतिशील कृषक, प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तनशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रमुख डॉ सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अंतर्गत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से अवगत कराया। आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया साथ ही डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस (सफेदा) का कृषि वानिकी में महत्व से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। संगोष्ठी में आनलाइन माध्यम से 100 से अधिक वैज्ञानिक, शोध छात्र व किसान आदि सम्मिलित हुए। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून से डा. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डा. बिलास सिंह, शुआट्स, प्रयागराज से डा. हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी से डॉ. संजीत कुमार ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।